



श्री भजन लाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

पंच-गोरव

उदयपुर



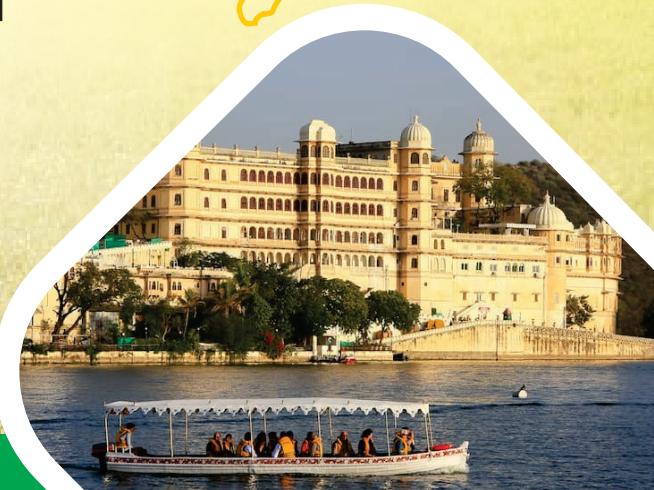
गंतव्य - फतहसागर एवं पिछोला

उत्पाद - मार्बल एवं ग्रेनाइट

वनस्पति प्रजाति - महुआ

उपज - सीताफल

खेल - तैयाकी





मुख्यमंत्री
भजन लाल शर्मा
राजस्थान

संदेश



राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक बनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

(भजन लाल शर्मा)



हेमन्त मीणा

राजस्व एवं उपनिवेदश मंत्री
जिला प्रभारी मंत्री, उदयपुर

संदेश

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा द्वारा शुरू किए गए पंच-गौरव कार्यक्रम के तहत राजस्थान के प्रत्येक जिले की अनूठी विरासत, उत्पाद व खेल को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक जिले में एक उपज, एक उत्पाद, एक वनस्पति प्रजाति, एक पर्यटन स्थल और एक खेल को चिन्हित कर संरक्षित व विकसित किया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य स्थानीय उद्योगों, कृषि, पर्यटन, वनस्पति संरक्षण, खेल और पारंपरिक शिल्प को बढ़ावा देना है।

उदयपुर जिले के पंच-गौरव की यह पुस्तिका हमारे जिले की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक प्रमाण है। यह पुस्तिका उन पांच अनमोल रत्नों को दर्शाती है जो हमारे जिले को अद्वितीय बनाते हैं। मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तिका हमारे जिले की गौरवशाली विरासत को संजोने और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने में सहायक होगी।

(हेमन्त मीणा)

बाबूलाल खराड़ी

जनजाति क्षेत्रीय विकास एवं गृह रक्षा मंत्री,
राजस्थान सरकार



संदेश

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार आपणो अग्रणी राजस्थान के ध्येय वाक्य के साथ काम कर रही है। विकास में प्रदेश के हर क्षेत्र की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए ही मुख्यमंत्री महोदय ने पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया है।

जनजाति बहुल दक्षिणी राजस्थान को प्रकृति ने कई सौंगातें दी हैं। इन्हीं में से उदयपुर जिले में एक उत्पाद के तहत चयनित मार्बल व ग्रेनाईट, एक उपज में चयनित सीताफल, वनस्पति प्रजाति में चयनित महुआ तथा गंतव्य के तौर पर चिन्हित पिछोला व फतहसागर झीलें शामिल हैं। खेल में तैराकी भी इस अंचल की नैसर्गिक प्रतिभा का हिस्सा है।

जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इन्हें संबल देने के लिए प्रयासरत रहा है। पंच-गौरव कार्यक्रम के तहत पारिस्थितिकी और रोजगार से जुड़े इन महत्वपूर्ण घटकों को विकसित किया जा सकेगा, जिससे जनजाति समुदाय सहित सभी लोगों को आर्थिक उन्नयन के लिए अवसर मिलेंगे।

(बाबूलाल खराड़ी)



डॉ. मन्नालाल रावत

सांसद
संसदीय क्षेत्र, उदयपुर

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आजादी की 100वीं वर्षगांठ पर विकसित राष्ट्र बनेगा। इसी मिशन के अनुरूप माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान् भजनलाल शर्मा समग्र विकास की सोच को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। राजस्थान सरकार इसी संकल्पना को साकार करने के लिए अग्रसर है। राज्य के शीर्ष नेतृत्व की मंशा है कि हर जिला अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व प्राकृतिक विरासतों पर गर्व का अनुभव करते हुए समग्र विकास में भागीदार बने। पंच गौरव कार्यक्रम इसी की एक परिणिति है।

उदयपुर में पंच गौरव के तहत चयनित उत्पाद मार्बल व ग्रेनाईट जहां जिले को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाएंगे, वही सीताफल और महुआ जनजाति अंचल में आजीविका के परंपरागत अवसरों को परिमार्जित और व्यापक बनाने में सहायक होंगे। कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी देने वाला उदयपुर जिला पंच गौरव कार्यक्रम में संबल पाकर तैराकी का नया हब बन सकता है। वहीं शहर की लाइफ लाइन कहीं जाने वाली विश्व प्रसिद्ध पिछोला और फतहसागर झीलें भी पर्यटकों को और अधिक रोमांचित करेंगी।

उदयपुर की पंच गौरव पुस्तिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। यह पुस्तिका उदयपुर की समृद्ध संस्कृति, जनजाति गौरव, प्राकृतिक सौंदर्य, प्रगतिशील विकास और खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करेगी। यह पुस्तिका न केवल उदयपुर के निवासियों के लिए, बल्कि देश और दुनिया भर के पर्यटकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण संसाधन सिद्ध होगी।

मैं इस पुस्तिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

(डॉ. मन्नालाल रावत)

टी. रविकान्त IAS
प्रभारी सचिव
उदयपुर



संदेश

राजस्थान सरकार ने सभी जिलों में पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया है। इसके तहत हर जिले में एक-एक उपज, वानस्पतिक प्रजाति, उत्पाद, पर्यटन स्थल एवं खेल पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

पंच-गौरव कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान को बढ़ावा देना, स्थानीय उत्पादों और पर्यटन स्थलों को प्रोत्साहित करना, खेलों को बढ़ावा देना और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करना, जिले के आर्थिक विकास को गति देना है।

पंच-गौरव कार्यक्रम के तहत प्रत्येक जिले में एक उपज, एक वानस्पतिक प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल एवं एक खेल को चुना गया है। इन पांच तत्वों को जिले के पंच-गौरव के रूप में जाना जाएगा। सरकार इन पांचों तत्वों के विकास के लिए विशेष योजनाएं बनाएगी और बजट आवंटित करेगी। इससे स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा। खेलों को बढ़ावा मिलने से युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। जिले की एक विशिष्ट पहचान बनेगी। यह कार्यक्रम उदयपुर जिले के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।

उदयपुर जिले के पंच-गौरव पर पुस्तिका प्रकाशन के लिए बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं

(टी. रविकान्त IAS)



प्रज्ञा केवलरमानी IAS
संभागीय आयुक्त
उदयपुर संभाग

संदेश

पंच-गौरव कार्यक्रम, जिलों की विशिष्ट पहचान को उभारने और स्थानीय संसाधनों को विकास से जोड़ने की एक अत्यंत प्रभावशाली पहल है। उदयपुर जिले द्वारा फतहसागर एवं पिछोला, मार्बल एवं ग्रेनाइट, महुआ, सीताफल व तैराकी के रूप में जिन पंच-गौरवों का चयन किया गया है, वे जिले की बहुआयामी क्षमताओं को रेखांकित करते हैं।

इन गौरवों पर आधारित "पंच-गौरव" जिला उदयपुर पुस्तिका, जिले के इतिहास, आर्थिक संभावनाओं एवं विकास योजनाओं की जानकारी को समाहित करते हुए, आमजन एवं पर्यटकों के लिए एक उपयोगी दस्तावेज सिद्ध होगी। यह पहल जिले को नई पहचान दिलाने में सहायक होगी।

इस सार्थक प्रयास के लिए शुभकामनाएं एवं जिले के उत्तरोत्तर विकास की कामना करती हूँ।

(प्रज्ञा केवलरमानी IAS)

नमित मेहता IAS

जिला कलक्टर

उदयपुर



संदेश

आपणो अग्रणी राजस्थान और विकसित राजस्थान – 2047 के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही राजस्थान सरकार ने प्रदेश के पंच मुखी विकास को बढ़ावा देने के लिए पंच-गौरव कार्यक्रम का शुभारंभ किया है। इसमें प्रत्येक जिले में एक उपज, एक वनस्पतिक प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल का चयन किया गया है। उदयपुर जिले के पंच-गौरव के रूप में एक उपज में सीताफल, उत्पाद में मार्बल एवं ग्रेनाईट के उत्पाद, वनस्पति प्रजाति में महुआ, खेल में तैराकी तथा पर्यटक स्थल में फतहसागर व पिछोला झील को शामिल किया गया है।

पंच-गौरव कार्यक्रम के माध्यम से जिले की विविधता और विशेषताओं को उभारने में मदद मिलेगी। साथ ही माननीय प्रधानमंत्री महोदय के “वोकल फॉर लोकल” और “लोकल टू ग्लोबल” की अवधारणा को भी बल मिलेगा।

उदयपुर के यह पंच-गौरव जिले की पहचान बन कर उभरेंगे। राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप इन पंच-गौरव को संरक्षित-स्वर्धित और विकसित करने के उद्देश्य से विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है। इसके माध्यम से पंच-गौरव आगामी समय में जिले के विकास और रोजगार उन्नयन में महती भूमिका निभाएंगे। यह पुस्तिका आमजन को अपने पंच-गौरव से रूबरू होने, उनकी उपयोगिता और महत्व को समझने तथा संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रेरित करने में सहायक सिद्ध होगी।

(नमित मेहता IAS)

पंच-गौरव

राजस्थान विविधताओं का प्रदेश है। यह विविधता भौगोलिक होने के साथ ही सांस्कृतिक और प्राकृतिक भी है। इन विविधताओं के आधार पर ही प्रदेश के हर जिले की अपनी विशेषताएं हैं। यहां हर जिले में अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं, तो राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने हर जिले की इन्हीं विविधताओं को पंच—गौरव में पिरोकर संरक्षित और संवर्धित करने की अनूठी पहल की है।

एक गंतव्य :- फतहसागर एवं पिछोला झील



"झीलों का शहर" नाम से विश्वविख्यात उदयपुर, अपने सुंदर जलाशयों और ऐतिहासिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। फतहसागर और पिछोला यहां की दो प्रमुख झीलें हैं, जिनका न केवल ऐतिहासिक बल्कि सांस्कृतिक और पर्यटन के दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्व है।

फतहसागर झील का इतिहास और महत्व

फतहसागर झील का निर्माण 1687 में महाराणा जयसिंह ने करवाया था। बाद में महाराणा फतहसिंह ने इसे पुनर्निर्मित करवाया, जिससे इसका नाम फतहसागर झील पड़ा। यह कृत्रिम झील तीन बांधों से बनी है और अरावली पर्वत शृंखला के बीच स्थित है। झील में तीन प्रमुख द्वीप हैं, जिनमें सबसे बड़े द्वीप पर नेहरू गार्डन विकसित किया गया है।

फतहसागर झील का ऐतिहासिक महत्व इस बात में निहित है कि यह उदयपुर के जल संरक्षण और सिंचाई व्यवस्था का अभिन्न अंग रही है। इसके निर्माण ने क्षेत्र की कृषि और जल आपूर्ति में सुधार किया। इसके अलावा, झील का शांत और सुरम्य वातावरण इसे ऐतिहासिक धरोहर और प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक बनाता है।

पिछोला झील का इतिहास और महत्व

पिछोला झील का निर्माण 1362 में एक स्थानीय बंजारे द्वारा किया गया था। निकट के गाँव "पिछोली" के कारण इसका नाम पिछोला हुआ। इस झील को बाद में महाराणा लाखा और फिर महाराणा उदयसिंह ने विस्तारित और सुसज्जित किया। उदयसिंह ने उदयपुर शहर की स्थापना के समय इस झील के किनारे ही राजमहल बनवाया, जिससे इसका महत्व और बढ़ गया।

पिछोला झील के चार प्रमुख द्वीप

जग निवास, जग मंदिर, मोहन मंदिर आइलैंड और अरसी विलास – अपनी अद्वितीय वास्तुकला और इतिहास के लिए प्रसिद्ध हैं। खासकर, जग निवास और जग मंदिर राजपूत वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं और विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।



पर्यटन में योगदान

फतहसागर और पिछोला झील उदयपुर के पर्यटन उद्योग की रीढ़ मानी जाती हैं। इन झीलों के किनारे स्थित सुरम्य परिदृश्य, नाव की सवारी और झील के द्वीपों पर स्थित ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

पिछोला झील में शाम के समय सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अत्यधिक मनमोहक होता है। झील किनारे स्थित होटल और रेस्तरां यहां के पर्यटन अनुभव को और भी खास बनाते हैं।

फतहसागर और पिछोला झीलों न केवल उदयपुर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की प्रतीक हैं, बल्कि इनका पर्यटन उद्योग में भी अहम योगदान है। ये झीलों न केवल जल संरक्षण और पर्यावरण संतुलन में सहायक हैं, बल्कि उदयपुर को एक अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पर्यटन में ट्रेवल लेजर द्वारा उदयपुर शहर को एशिया में प्रथम एवं विश्व में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। इन झीलों के माध्यम से उदयपुर अपने समृद्ध इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का संदेश पूरी दुनिया में पहुंचाता है। वर्ष 2024 में जिले में कुल पर्यटकों की संख्या बीस लाख से अधिक रही जिनमें डेढ़ लाख विदेशी पर्यटक थे। पर्यटन जिले में लोगों की आय स्त्रोत एवं रोजगार उपलब्ध कराने में भी प्रमुख योगदान देता है।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधियां

- फतहसागर पर कलरफुल डांसिंग फाउंटेन, डेकोरेटिव लाईटिंग, सेल्फी पॉइंट्स का निर्माण एवं पर्यटन सहायता डेस्क की स्थापना।
- पिछोला झील के किनारे जलबुर्ज की ओर बर्ड वॉचिंग पॉईंट का निर्माण एवं गणगौर घाट पर सप्ताहांत पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष आयोजन।

क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित अनुमानित कुल व्यय ₹ 350 लाख

एक जिला एक उत्पादः मार्बल एवं ग्रेनाइट

उदयपुर शहर को मार्बल सिटी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसके 200 किलोमीटर की परिधि में मार्बल और ग्रेनाइट की माइन्स एवं प्रोसेसिंग यूनिट्स स्थित हैं। उदयपुर शहर में श्रेष्ठ मार्बल प्रोसेसिंग एवं पोलिशिंग के साथ मूल्य संवर्धन किया जाता है। उदयपुर के ऋषभदेव एवं सुखेर क्षेत्र में मार्बल कटिंग एवं प्रोसेसिंग इकाइयों का क्लस्टर स्थापित है। इकाइयों द्वारा ग्रीन, पिंक, ऑनेक्स एवं सफेद मार्बल के वेल्यू एडेड उत्पाद के रूप में देश-विदेश में निर्यात भी किया जा रहा है।



दक्षिणी राजस्थान के पीकौम्बियन संरचनाओं में ग्रीन मार्बल एवं अन्य मार्बल के अनूठे और सबसे बड़े भण्डार मुख्य रूप से उदयपुर के ऋषभदेव, खेरवाड़ा और आस-पास स्थित हैं। भूवैज्ञानिक रूप से यह सर्पाकार है लेकिन उत्कृष्ट पॉलिश और कम कठोरता लेने के लिए इसकी आसान रुकावट के कारण



संगमरमर उद्योग में एक नाम स्थापित कर लिया है। संपूर्ण भारत में ग्रीन मार्बल का उत्खनन केवल राजस्थान के इस हिस्से में किया जाता है और बाजार में केशरियाजी ग्रीन के रूप में बेचा जाता है। यह अद्वितीय, गहरे रंग का, अद्वितीय इंटरग्रोथ संरचना, ऐसिड प्रतिरोधी और सोल्वेंट बेस है। ग्रीन, पिंक, ऑनेक्स एवं सफेद मार्बल का प्रयोग भवन निर्माण के अतिरिक्त हैण्डीक्राफ्ट के कलात्मक आर्टिकल एवं मूर्तियां बनाने में किया जाता है।

ओडीओपी का प्रमुख उत्पादन / उत्खनन केन्द्र ऋषभदेव, खेरवाड़ा है तथा

प्रोसेसिंग इकाइयों का क्लस्टर ऋषभदेव, सुखेर / अंबेरी में स्थापित है। जिले में लगभग 725 इकाइयां मार्बल एवं ग्रेनाईट (प्रोसेसिंग / ट्रेडिंग / निर्यात) की स्थापित हैं, जिनमें लगभग 3500 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। जिले में मार्बल / ग्रेनाईट इकाइयों द्वारा वार्षिक लगभग 2500 से 3000 करोड़ रु. का क्रय विक्रय किया जाता है।

औद्योगिक प्रोत्साहन शिविरों में एक जिला एक उत्पाद योजना एवं विभाग की अन्य विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई। मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना एवं प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना अंतर्गत लगभग 100 मार्बल / ग्रेनाइट इकाइयों को ऋण सुविधा से लाभान्वित किया गया है। समय—समय पर आयोजित विवाद एवं शिकायत निवारण तंत्र की बैठक में उद्योग संघों को अंतर्राष्ट्रीय / राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर आयोजित होने वाले मार्बल / ग्रेनाइट से संबंधित एक्सपो / प्रदर्शनी / स्टोन मार्ट आदि के बारे में जानकारी देकर भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया गया। राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना—2010, 2014, 2019, 2022 एवं 2024 अंतर्गत भी 100 से ज्यादा मार्बल / ग्रेनाइट की इकाइयों को लाभान्वित किया गया। वर्तमान में केन्द्र सरकार के जेम पोर्टल पर भी उद्यमियों को इकाई के पंजीयन हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है।

ODOP के तहत यह कार्य प्रस्तावित

1. जिले के ओडीओपी से संबंधित उत्पादों का डेटाबेस तैयार किया जाना जिसमें उपक्रम का समस्त विवरण, वार्षिक क्षमता, रोजगार, निर्यात का विवरण आदि जानकारी शामिल हो।
2. ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादको एवं शिल्पियों को प्रतिनिधित्व की दृष्टि से एक एसोसिएशन / संघ / संस्थान का गठन कराते हुये उनके पदाधिकारी से संबंधित सूचना संकलित किया जाना।
3. जिले के ओडीओपी उत्पादों के प्रचार—प्रसार हेतु आवश्यकतानुसार बुकलेट / ब्रोशर, लघु फ़िल्म, कॉफी—टेबल बुक आदि तैयार करना।
4. राजस्थान सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक जिला एक उत्पाद

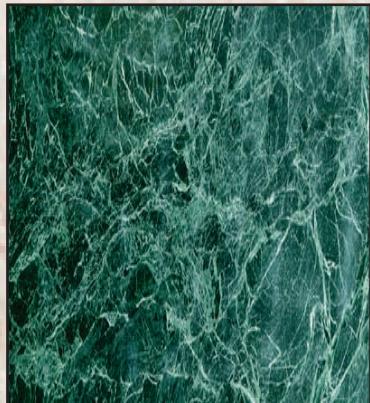
पॉलिसी—2024 में निम्न प्रावधानों के तहत पंच गौरव संवर्द्धन हेतु निम्न प्रावधान किए गए हैं –

- ◆ नवीन सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रूपए एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत या अधिकतम 20 लाख रूपए तक मार्जिन मनी अनुदान सहायता।
- ◆ सूक्ष्म व लघु उद्यमों को उत्कृष्ट तकनीक व सॉफ्टवेयर पर 50 प्रतिशत या 5 लाख रूपए का अनुदान।
- ◆ क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर पर 75 प्रतिशत या 3 लाख रूपए तक पुनर्भरण।
- ◆ विपणन आयोजनों में भाग लेने के लिए 02 लाख तक सहायता।
- ◆ ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म फीस पर 75 प्रतिशत या 1 लाख रूपए प्रतिवर्ष का 2 साल तक पुनर्भरण।

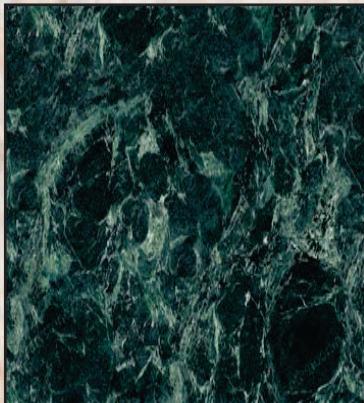
जिला उदयपुर में ग्रीन, पिंक व सफेद कलर का मार्बल निकलता है। जिले की तहसील ऋषभदेव एवं गोगुन्डा में विश्वविख्यात ग्रीन मार्बल के खनन पट्टे हैं वह भी विदेशों में निर्यात किया जाता है। विश्व में ग्रीन मार्बल का उत्पादन मुख्यतः उदयपुर जिले में ही होता है। सफेद रंग का मार्बल मुख्यतः बिछीवाड़ा, जसपुरा तहसील वल्लभनगर जिला उदयपुर में है, जिसमें खनन पट्टे स्वीकृत हैं। इसके अतिरिक्त खनिज मार्बल के लखावली तहसील बडगांव में भी पूर्व में खनन पट्टे संचालित थे। इसी प्रकार पिंक मार्बल के लिए ग्राम बाबरमाल तहसील सराड़ा जिला सलूम्बर तथा ग्राम देईमाता तहसील गिर्वा जिला उदयपुर में स्वीकृत होकर प्रभावी है, जो कि विदेशों में भी जाता है। उक्त खनन क्षेत्र जैसे पिंक मार्बल व सफेद मार्बल मुख्यतः लाईमबेस तथा ग्रीन मार्बल सरपेनटाईन होता है। जिले में खनिज मार्बल के 199 खनन पट्टे स्वीकृत हैं जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 194 हैक्टर है। जिनमें गत वर्ष का उत्पादन एवं प्राप्त राजस्व रॉयल्टी निम्नानुसार है:—

Tehsil	Area in Hectare	No of Leases	2021-22		2022-23		2023-24	
			Production	Revenue	Production	Revenue	Production	Revenue
Sarada, Goguda, Vallabhanagar	66	88	1.4 LacMT	3.4 Cr.	1.8 LacMT	4.23 Cr.	2 LacMT	4.54 Cr.
Rishabhdeo	127.58	111	2.51 LacMT	9 Cr.	2.65 LacMT	9.5 cr.	2.8 LacMT	10 cr
Total	193.58	199	3.91 LacMT	12.4 Cr	4.45 LacMT	13.73 Cr.	4.8 LacMT	14.54 Cr

इसके अतिरिक्त डेकोरेटिव स्टोन के रूप में फिलाईट शिष्ट व ग्रेनाईट के खनन पट्टे भी स्वीकृत होकर प्रभावी हैं।



ब्रीन मार्बल ऋषभदेव



ब्रीन मार्बल गोगुन्दा



पिंक मार्बल बाबरमाल



पिंक मार्बल बाबरमाल

पंच-गौरव कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां –

1. भीलों का बेदला में 26.98 हैक्टेयर प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र को मार्बल/ग्रेनाईट/ग्रीन मार्बल हेतु डेडिकेटेड औद्योगिक क्षेत्र घोषित कर स्टोन पार्क विकसित किया जाएगा।
2. जिले में एक मार्बल ग्रेनाईट उत्पाद के स्टोन फेयर का आयोजन किया जाना प्रस्तावित।
3. जिले के प्रमुख स्थानों पर मार्बल ग्रेनाईट उत्पादों का डिस्प्ले एवं IEC गतिविधियां।
4. जिला स्तर पर पंच –गौरव पार्क एवं चौराहा निर्माण की योजना।

क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित अनुमानित कुल व्यय ₹ 100 लाख



एक जिला एक प्रजाति : महुआ

महुआ (मधुका इंडिका) भारत के जनजातीय समुदाय का महत्वपूर्ण भोज्य पदार्थ है। महुआ शुष्क क्षेत्र का पतझड़ी वृक्ष है और भारत का मूल निवासी है। महुआ मध्य भारत के सबसे महत्वपूर्ण पेड़ों में से एक है। महुआ के पेड़ों में बड़ी फैली हुई जड़ प्रणाली होती है, हालांकि उनमें से कई सतही होती हैं। बड़े सैपवुड के साथ लकड़ी बहुत सख्त होती है।

यह छोटे बोले और गोल मुकुट वाले बड़े और पर्णपाती पेड़ हैं। एनटीएफपी के बीच महुआ को एक विशेष दर्जा प्राप्त है क्योंकि यह विभिन्न तरीकों से जनजातीय आजीविका प्रणाली से जुड़ा हुआ है। भोजन और अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के अलावा, यह मौसमी आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। जनजातीय संस्कृति में पेड़ का धार्मिक और सौंदर्य मूल्य है। औषधीय और पोषक गुणों से भरपूर महुआ के फूल और बीजों को इकट्ठा करके सुखाया जाता है। एक अकेला परिपक्व पेड़ अपने फूलों और बीजों से लगभग 1500 रुपये की आय प्रदान कर सकता है, साथ ही कई अन्य मूर्त और अमूर्त लाभ भी प्रदान कर सकता है। महुआ गरीब परिवारों को आजीविका सुरक्षा



प्रदान करता है जो इसे स्वयं के उपभोग के लिए एकत्र करते हैं और बिक्री के लिए आय का उपयोग दैनिक घरेलू सामान खरीदने के लिए किया जाता है।

महुआ, इंडियन बटर ट्री, एक महत्वपूर्ण पेड़ है जिसका महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक मूल्य है और यह भारतीय उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पाया जाता है। यह एक पर्णपाती पेड़ है जो शुष्क उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु परिस्थितियों में व्यापक रूप से बढ़ता है। यह बहुत कठोर है और चट्टानी, गंभीर, लवणीय और सॉडिक मिट्टी पर अच्छी तरह से पनपता है, यहां तक कि बंजर चट्टान की दरारों के बीच मिट्टी की जेबों में भी। महुआ Plant Family-Sapotaceae से संबंधित है। यह उन बहुउद्देशीय वन वृक्ष प्रजातियों में से एक है जो तीन प्रमुख यानी— भोजन, चारा और ईंधन (3F-Food, Fodder and Fuel) के लिए उपयोगी है।

महुआ के फूल एवं फल ग्रीष्म ऋतु में उपजते हैं। जनजातीय समुदाय के पास चावल व अन्य भोज्य पदार्थों की कमी के समय इसको भोजन के रूप में उपयोग करते हैं। मध्य एवं पश्चिमी भारत के दूरदराज वन अंचलों में बसे ग्रामीण आदिवासी जनों के लिए रोजगार के साधन एवं खाद्य रूप में महुआ वृक्ष का महत्व बहुत अधिक है। इसे अलग—अलग राज्यों में विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है। हिन्दी में महुआ, इंगलिश में इंडियन बटर ट्री, संस्कृत में मधुका, गुडपुष्पा इत्यादि।



उपयोगिता

- ✿ ब्राउन केसरिया रंग के पके हुए गूदेदार बेरी रूप फल में 1 से 4 चमकदार बीज पाये जाते हैं। बीज के अंदर की गिरी का वजन बीज के वजन का 70 प्रतिशत रहता हैं बीजों में तेल की मात्रा 33–43 प्रतिशत तक होती है। बीज से प्राप्त तेल को महुआ बटर या कोको बटर के नाम से जाना जाता है। जिसका उपयोग शोधन करके कन्फेक्सनरी व चाकलेट उद्योग में लिया जाता है। इसके तेल को लुब्रीकेटिंग ग्रीस के निर्माण, जूट व मोमबत्ती उद्योग में लिया जाता है। औषधीय जैसे त्वचा रोगों, गठिया व सिरदर्द में काम में लिया जाता है। इसका पुराने कब्ज, भंगदर इत्यादि रोगों में भी उपयोग किया जाता है। इसका तेल रेचक कब्जहर के रूप में बवासीर एवं फिशुला रोगों के उपचार में काफी लाभप्रद है। तेल बायोफ्यूल (डीजल) के रूप में उर्जा का मुख्य स्रोत है आदिवासी समुदाय द्वारा इसे खाने व प्रकाश के रूप में लिया जाता है।
- ✿ महुआ फूलों से निम्नलिखित व्यंजन बनाये जाते हैं जैसे— रसकुटका, महुआ खोल्ली, धोइटा, महुआ बिस्किट, डोभरी, हलवा, लड्ढा, सलोनी, मखानी, जैम इत्यादि।
- ✿ महुआ की पत्तियाँ मवेशी, बकरियाँ एवं भेड़ों के चारे के रूप में काम आती है इसकी पत्तों की वाष्प अंडकोष की सूजन व अन्य रोगों के उपचार में काम में लिये जाते हैं।
- ✿ महुआ की लकड़ी का उपयोग जलाने में किया जाता है जिसकी केलोरीफिक मान 4890–5000 किलो केलोरी / कि.ग्रा. तक होता है।
- ✿ व्यवसायिक रूप से महुआ फूलों का उपयोग देशी शराब बनाने में किया जाता है। एक टन फूलों से 340

- ◆ लीटर एल्कोहल प्राप्त होता है।
- ◆ महुआ फूल की पंखुड़ियों में अवांछित गंध वाला पदार्थ आवश्यक तेल के रूप में पाया जाता है। जिसमें पेन्सीसायनिन, बीटेन, मेलिक तथा संक्सेनिक अम्ल पाये जाते हैं।
- ◆ महुआ वृक्ष की छाल का काढ़ा अर्थराइटिस व जोड़ों के दर्द के लिए एवं मधुमेह आदि रोगों में किया जाता है।
- ◆ महुआ के फलों को भोजन की तरह काम में लिया जाता है। परिपक्व फलों को प्याज व लहसुन के साथ पकाकर सब्जी के रूप में काम में लिये जाते हैं। इसके फलों में 55 से 65 प्रतिशत रेशा, 10 से 15 प्रतिशत शर्करा, 1.8 से 2.4 प्रतिशत खनिज, 51 से 74 मिलीग्राम विटामिन सी एवं 586 से 890 आई. यू. विटामिन ए प्रति 100 ग्राम होते हैं।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां—

1. महुआ के बीजों का एकत्रीकरण स्थानीय लोगों से करवाना एवं उनको बीज से बनने वाले अलग—अलग उत्पादों के बारे में क्षमतावर्धन कर उनकी आय में वृद्धि करना।
2. नर्सरी में अधिकाधिक महुआ की पौध तैयार करना एवं लोगों में वितरण करना।
3. महुआ के पारिस्थितिकी महत्व को देखते हुए स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर वृक्षारोपण अभियान चलाना। (वर्तमान में वन विभाग की तरफ से जो वृक्षारोपण कार्य करवायें जाते हैं, उनमें से 3—5 प्रतिशत वृक्षारोपण महुआ का होता है जिसे 10 प्रतिशत तक बढ़ाया जाना प्रस्तावित है।)

क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित अनुमानित कुल व्यय ₹ 52 लाख

एक जिला एक फल :- सीताफल



सीताफल एक अत्यन्त पौष्टिक तथा स्वादिष्ट फल है। सीताफल एनोनेसी कुल का पौधा है तथा इसका वानस्पतिक नाम एनोना स्कवेमोसा है। सीताफल के पौधों में सूखा सहन करने की अधिक क्षमता होती है। राजस्थान में सीताफल की खेती मुख्य रूप से मेवाड़ क्षेत्र की अरावली पर्वत शृंखला वाले क्षेत्रों में की जा रही है।

उदयपुर जिले में कोटडा, फलासिया, गोगुन्दा, सायरा, बडगांव, नयागांव, खेरवाडा आदि क्षेत्रों के पर्वतीय वन एवं पथरीली भूमि में सीताफल के पेड़ काफी मात्रा में प्राकृतिक रूप से पाये जाते हैं।

स्वास्थ्यवर्धक सीताफल

सीताफल एक मधुर फल है, आम फलों का राजा है किन्तु आम भी सीताफल से पीछे है। यह स्वास्थ्य एवं समृद्धि का मूल है। सीताफल में पाये जाने वाले विभिन्न पोषक तत्वों के आधार पर यह औषधीय गुणों से भरपूर, शरीर की दुर्बलता को दूर करने वाला, शरीर में नई ऊर्जा का संचार करता है।

सीताफल में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेड, रेशा, वसा सहित कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, सोडियम, जस्ता जैसे खनिज लवण और विटामिन्स पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इसके अतिरिक्त सीताफल में जरूरी एमीनो एसिड्स, पेटोथैरेनिक एसिड, ओमेगा 6 फैटी एसिड, फाइबर एवं एन्टी ऑक्सीडेन्ट से भरपुर होने के कारण यह वातनाशक, पित्तनाशक एवं तृष्णानाशक है। यह बलवर्धक, शुक्रवर्धक, मधुर स्वादिष्ट फल है।

आयुर्वेद एवं कई बुजुर्गों के अनुसार सीताफल इतना गुणकारी है कि शायद ही शरीर का कोई हिस्सा ऐसा हो जिसे यह फायदा न पहुंचाता हो। सीताफल में अनगिनत औषधीय गुणों के समाहित होने से पूरे शरीर को स्वस्थ और बीमारियों से दूर रखने का आसान उपाय है।

यह रोग प्रतिरोधक क्षमता, दमकती त्वचा, बी.पी. एवं मधुमेह नियंत्रण, बेहतर पाचन एवं दिल को स्वस्थ रखने, एनीमिया, आंखों की कमजोरी एवं गठिया रोग से सुरक्षा, कैंसर के बचाव एवं बलवर्द्धक के रूप में एवं प्रेगनेंसी में भी सहायक है। सीताफल के बीजों में 30 प्रतिशत तेल की मात्रा पाई जाती है, जो साबुन निर्माण एवं कीट नियंत्रण में काम आता है। इसका छिलका खाद के रूप में भी उपयोगी है।



सीताफल के व्यंजन

सीताफल के फल से कई उत्पाद बनाये जाकर प्रयोग में लिये जाते हैं। इनमें मुख्य रूप से सीताफल पल्प, सीताफल की आईसक्रीम, श्रीखण्ड, रबड़ी, जेम, जूस, टॉफी, सीताफल पाउडर, बासुन्दी आदि व्यंजन बनाये जा सकते हैं। जिले की जलवायु सीताफल के लिए उपयुक्त है। सीताफल के औषधीय गुणों के कारण इस फल के निर्यात की प्रचूर संभावनाएँ हैं।

उदयपुर जिले में राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद के तहत महिला स्वयं सहायता समूह के कलस्टर लेवल फेडरेशन के माध्यम से सीताफल का पल्प निकालने की यूनिट संचालित है। जिसमें वर्ष 2023–24 में 930 किलोग्राम पल्प तैयार किया गया।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य / गतिविधियां –

1. 700 किसानों को सीताफल के कलमी (ग्रॉफटेड) पौधों का वितरण।
2. सीताफल पौधारोपण करने वाले किसानों/स्वयं सहायता समूहों का कृषि विज्ञान केंद्र बडगांव / वल्लभनगर पर प्रशिक्षण।
3. कलस्टर संगठन में सीताफल प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित कर समूह सदस्यों द्वारा उक्त यूनिट का क्रियान्वयन करते हुए समूह सदस्यों की आय में वृद्धि करना।
4. कृषि उपज मण्डी (फल सब्जी) की आधारभूत सुविधाओं का उन्नयन करना।

क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित अनुमानित कुल व्यय ₹ 100 लाख



एक जिला एक खेल : तैराकी

तैराकी एक जलक्रीड़ा है। इसके अन्तर्गत अपने हाथ पैर की सहायता से जल में गति करना होता है जो किसी कृत्रिम साधन के बिना किया जाता है। तैराकी मनोरंजन भी है और स्वास्थ्य की द्वष्टि से लाभकारी भी।

तैराकी का आरम्भ :- पुरातात्त्विक साक्ष्य बताते हैं कि आधुनिक तैराकी का अभ्यास 2500 ईसा पूर्व से ही मिश्र में और उसके बाद असीरियन, रोमन और ग्रीक सभ्यताओं में किया जाता रहा है।

उदयपुर में तैराकी की शुरुआत :-

झीलों की नगरी उदयपुर में तैराकी सदियों से आमजन के लिए पंसदीदा मनोरंजन और खेल साधन रहा है। आधुनिक तैराकी की शुरुआत प्रसिद्ध खिलाड़ी जोतसिंह चौहान, मदन सिंह राजावत प्रतापसिंह आदि खिलाड़ियों ने पिछोला झील में प्रारम्भ की थी।



प्रारंभ में उसका दायरा सीमित रहा। सन् 1967–68 में राजस्थान महिला विद्यालय में नवनिर्मित तरणताल पर राष्ट्रीय विद्यालयी तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें अजमेर की तैराक सुश्री रिमा दत्ता व्यक्तिगत चैम्पियन रही और भारत सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित कर अर्जुन पुरस्कार से नवाजा गया।

- ✿ सन् 1969 से 1973 तक उदयपुर में कई तैराकों ने अपना शानदार प्रदर्शन किया। 1973 में श्री विक्रम सिंह चन्देल ने राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहराया।
- ✿ सन् 1968 में उदयपुर जिला तैराकी संघ का गठन किया गया।
- ✿ 1981 में प्रथम बार उदयपुर से श्री विक्रम सिंह चन्देल एन.आई.एस कर राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद में तैराकी प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। इसके पश्चात् उदयपुर में तैराकी खेल का प्रचलन उच्च स्तर पर प्रारम्भ हुआ। उदयपुर से 4 प्रशिक्षक तैयार किए गए, जो आज राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद में नियुक्त हैं। इनमें उदयपुर में डॉ. महेश पालीवाल महाराणा प्रताप खेलगांव में नियुक्त हैं।
- ✿ 1983 से 1987 तक उदयपुर ने लगातार पाँच वर्ष तक राजस्थान तैराकी जनरल चैम्पियनशिप प्राप्त की।

महाराणा प्रताप खेलगांव में तैराकी

उदयपुर में तैराकी के प्रति बढ़ते रुझान को देखते हुए उदयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा महाराणा प्रताप खेलगांव में 50 मीटर तरणताल का निर्माण किया गया।

- ✿ महाराणा प्रताप खेलगांव तरणताल पर कई जिला स्तरीय/राज्य स्तरीय/राष्ट्रीय स्तरीय/पैरा राष्ट्रीय स्तर

की प्रतियोगिता आयोजित कराई गई। इन प्रतियोगिताओं से उदयपुर जिले में तैराकी का प्रचलन राज्य/जिला/ब्लॉक स्तर पर चल रहा है।

- ◆ तैराकी खेल में इंगिलिश चैनल में भवित शर्मा, गौरवी सिंघवी, पैरा स्वीमिंग में जगदीश तेली, जमनालाल, राष्ट्रीय स्तर पर युग चैलानी, निखिल जागिंड, विधि सनाद्य, विद्यान सनाद्य जैसे तैराकों ने उदयपुर को गौरवान्वित किया।
- ◆ महाराणा प्रताप खेलगांव में जनजाति अकादमी के खिलाड़ी भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां –

1. महाराणा प्रताप खेलगांव में तरणताल को ऑल वेदर किया जाना।
2. तरणताल परिसर में शेड का निर्माण।
3. खेलों से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना
4. राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता
5. राष्ट्रीय पैरा प्रतियोगिता
6. खिलाड़ियों हेतु खेल किट
7. खेल उपकरण



युग चैलानी
राष्ट्रीय यटक
विजेता तैराक



गौरवी सिंघवी
सबसे कम आय की
इंगिलिश चैनल पार
करने वाली तैराक



जमनालाल
पैरास्वीमर

क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित अनुमानित कुल व्यय ₹ 1234.28 लाख



- मार्गदर्शक** : श्री नमित मेहता, जिला कलकटर, उदयपुर
- सम्पादक** : गौरीकांत शर्मा, उपनिदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क, उदयपुर
विनय सोमपुरा, एपीआरओ, सूचना एवं जनसम्पर्क, उदयपुर
- सहयोग** : पुनीत शर्मा, संयुक्त निदेशक, आर्थिक एवं सांरिक्षकी, उदयपुर
राहुल दाहिमा, सहायक सांरिक्षकी अधिकारी, आर्थिक एवं सांरिक्षकी, उदयपुर
- प्रकाशक** : जिला प्रशासन, उदयपुर
- मुद्रक** : द्वे ऑफसेट प्रिन्टर्स, उदयपुर



⑪ राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक जिले में एक उपज, एक उत्पाद, एक प्रजाति, एक पर्यटन एवं एक खेल को बढ़ावा देने के लिए, पंच गौरव कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। संबंधित जिले में इन श्रेणियों में चयनित तत्वों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए, ताकि इनके संरक्षण और प्रोत्साहन को बढ़ावा मिल सके। ⑫

- मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा